पुस्तकालय–पद्धति

गिजुभाई

गिजुभाई का नाम लेते ही एक ऐसे व्यक्ति की तस्वीर उभरकर आती है जो शिक्षा में अनंत आस्था रखता था। गिजुभाई का मानना था कि शिक्षा के माध्यम से समाज में बदलाव लाया जा सकता है। बच्चों के व्यक्तित्व को शिक्षा के माध्यम से आकार दिया जा सकता है। गिजुभाई ने शिक्षा के संदर्भ में पुस्तकालय की भूमिका को अपने ढंग से रेखांकित किया है। वे पुस्तकालय को शिक्षा की एक पद्धति के रूप में देखते हैं। बच्चों के संदर्भ में पुस्तकालय की भूमिका क्या हो? इस पर गिजुभाई ने काफी बढ़िया तरह से कहा है। केवल स्कूल में ही नहीं बल्कि गांव–गांव में पुस्तकालयों की पैरवी करते हैं गिजुभाई।

पुस्तक स्वयं एक शिक्षा–गुरु है और पुस्तकालय विद्यालय है। विद्यालय में लोग ज्ञान पाने के साधन–भर पाते हैं, जबकि पुस्तकालय में जाकर तो वे स्वयं ज्ञान प्राप्त करते हैं।

एक अच्छा पुस्तकालय कई शिक्षकों की गरज पूरी करता है। शिक्षक की तरह पुस्तकालय विद्यार्थियों को न तो धमकाता है, न उनसे अनुशासन पलवाता है, न कक्षा में चढ़ाता और उतारता है, न मिथ्या स्पर्धा में प्रवेश कराता है, और न परीक्षा का भय ही उत्पन्न करता है। फिर भी वह पल–पल में अपने पास आनेवालों को प्रेम–पूर्वक, विनय–पूर्वक और रुचि–पूर्वक पढ़ाता रहता है।

किसी भी स्थान में, चाहे विद्यालय के साथ अथवा विद्यालय के बिना

भी, पुस्तकालय शिक्षा की एक स्वयं पद्धति–स्वरूप है।

हर एक विद्यालय में पुस्तकालय को एक अतिरिक्त शिक्षक माना जाना चाहिए। शिक्षकों को चाहिए कि वे विद्यार्थियों को पूरे समय तक पढ़ाते रहने का अपना मोह छोड़कर उनको पुस्तकालय में जाने की अधिक से अधिक स्वतंत्रता दें। स्वाध्याय–पद्धति में विद्यार्थियों के लिए पुस्तकों के परिचय की अच्छी व्यवस्था रहती है। प्राथमिक विद्यालय की शिक्षा–व्यवस्था में बालकों को विद्यालय के आधे समय तक पुस्तकालय में रखने से शिक्षा का काम भी निश्चित रूप से अधिक सुदृढ़ बनेगा। जिस समय में विद्यार्थी पुस्तकालय में जाकर बैठें, उस समय में शिक्षक वहां एक अच्छे ग्रंथपाल की भूमिका निबाएं। पुस्तकालय की कौन–कौन सी पुस्तकें अच्छी हैं, किनको, कौन सी पुस्तक दी जाए, किसकी रुचि किस पुस्तक में जगाई जाए, आदि काम शिक्षक वहां करता रहे।

पुस्तकालय विद्यालय के रूप की तरह ही प्रयोगशाला के रूप में भी काम करता रहेगा। ग्रंथपाल के रूप में शिक्षक अच्छी–बुरी पुस्तकों की जांच करता रहे, बुरी पुस्तकों को टालकर वह अच्छी पुस्तकें विद्यार्थियों के सामने रखे। किस उमर में कौन सी पुस्तक रुचि–पूर्वक पढ़ी जाती है, किन विषयों पर लिखी गई पुस्तकें किस उमर में अधिक पढ़ी जाती हैं, पुस्तक को पढ़ते समय थकावट की मात्रा कितनी बढ़ती या घटती है, कुल मिलाकर विद्यार्थी पर पढ़ी हुई पुस्तक की कैसी छाप पड़ती है, आदि विषयों पर अपनी अलग–अलग टिप्पणियां तैयार करके उनके अध्ययन की मदद से शिक्षक कई सत्यों अर्थात् सिद्धान्तों का सार निकाल सकता है।

जब पुस्तकालय एक शिक्षा–पद्धति का रूप लेता है, तो अपने संग्रह में और अपनी रचना में वह एक सुव्यवस्थित स्थान का स्वरूप धारण कर लेता है। प्रवेशिका अथवा बालपोथी से लेकर आठवीं कक्षा तक की भाषा, इतिहास, भूगोल, गणित, विज्ञान आदि विषयों की पुस्तकें, पुस्तकालय में होनी चाहिए। क्रम–क्रम से आगे बढ़नेवाली पुस्तकों को पढ़ते–पढ़ते पढ़ने वाले का ज्ञान भी एक सिलसिले के साथ आगे बढ़ता रहेगा। इस तरह सिलसिले से टांड पर रखी गई पुस्तकें पाठ्यपुस्तकों की गरज पूरी करेंगी। पाठ्यविषयों के जानकार लोगों को अभी तक इस प्रकार की पुस्तकों की रचना करने की बात सूझी नहीं हैं, और शिक्षकों को भी ऐसी पुस्तकें बहुत जरूरी लगी नहीं है। क्योंकि अब तक पुस्तकालय–परिचय–पद्धति की अपेक्षा पाठ्यक्रम का और व्याख्यान–पद्धति से शिक्षा देने का ज़ोर ही बहुत ज़्यादा रहा है।

विद्यालयों की तरह ही विद्यालयों के बाहर भी पुस्तकालय रूपी विद्यालय गांव–गांव में और मुहल्ले–मुहल्ले में स्थापित होने चाहिए।

विद्यालयों की तरह ही विद्यालयों के बाहर भी पुस्तकालय रूपी विद्यालय गांव–गांव में और मुहल्ले–मुहल्ले में स्थापित होने चाहिए। शिक्षकों को वेतन देना पड़ता है, जबकि पुस्तकालयों के लिए पुस्तकें ख़रीदनी होती हैं। शिक्षक को पढ़ाने की मेहनत करनी होती है, जबकि पुस्तकों को ज्ञान देने की कोई मेहनत नहीं करनी पड़ती। हां, बार–बार पढ़े जाने पर उनको फटना तो पड़ेगा ही। शिक्षक की निश्चित उपस्थिति के बिना विद्यालयों में पढ़ाई का काम हो ही नहीं सकता। इसके विपरीत, अगर हम पुस्तकालयों के दरवाजे चौबीसों घण्टे खुले रखेंगे, तो पढ़ाई चौबीसों घण्टे चलती रहेगी।

व्यवस्था, शान्ति, सभ्यता और विनय की शिक्षा देते रहने का प्रबन्ध भी पुस्तकालय कर सकेगा। पुस्तकों का उपयोग कैसे करना, उनको किस तरह से पढ़ना, पास में बैठ कर पढ़ने वाले के साथ कैसा व्यवहार करना, कैसे आना और कैसे जाना, बातचीत किस तरह से करना, आदि बातों को सीखने में अपने आप ही काफी पढ़ाई हो जाती है। इस तरह पुस्तकालय की भी अपनी एक शिक्षा–पद्धति है।

प्राथमिक शाला में शिक्षा–पद्धतियां : गिजुभाई ग्रंथमाला–9
प्रकाशक – मोंटेसरी–बाल–शिक्षण–समिति प्रकाशन से साभार।